सबला

वर्ष 5 : अंक 1 सेवाग्राम विकास संस्थान, नई दिल्ली अप्रैल-मई, 1992

इस अंक में

हमारी बात	1
इतिहास से सवाल —सुहास कुमार	2
हमारा दिवस—महिला दिवस	3
जागोरी ने मनायो री अपना दिवस —वीणा शिवपुरी, सुहास कुमार	4
जागोरी री पाती	6
मैं औरत हूं —प्रगति पाटील	6
'सबला' के पुरुष पाठकों के नाम पत्र —कमला भसीन	7
हमारी बेड़ियां —साथिन री कागद, बांसवाड़ा	9
सुनोगी मेरी कहानी?	11
किताबें छूने पर अब तो न डांटोगी —अनुराधा गुप्ता	13
आज तुम्हें बदलना है —शोभा कुमारी	15
औरतों के खिलाफ: पारिवारिक हिंसा —वीणा शिवपुरी	16
जुर्म बलात्कार का	18
एक अभियान: नौर प्लांट के खिलाफ	20
विदेश की एक मिसाल	21
केरल का समाज: औरतें पढ़ी लिखी हैं	22
बांध कर तूफान को —सरोज गुप्ता	23
ग्राम पंचायतों में महिलाओं की भूमिका —'सूत्र' की रपट	24
तीन कविताएं	25
सामाजिक मान्यताओं से जूझती औरतें —रीता चतुर्वेदी	26
शिक्षा मचाएगी खलबली —रुनू द्वारा अनुदित	26
'सबला' के लेखों पर चर्चा —अनीता ठैनुआ	27
प्रेरकों ने लिखा है	29
'सबला' के बारे में हमारी बात —कमला भसीन	31

सहयोग मंडल

कमला भसीन

सुहास कुमार

वीणा शिवपुरी

ज्ञानेंद्र प्रसाद जैन

'जागोरी' समूह

प्रतिभा गुप्ता

रचना बड़ोदिया

(चित्रांकन : मुख्य पृष्ठ)

ग्रामीण बहनों की द्विमासिक पत्रिका—शिक्षा विभाग, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार तथा 'नोराड', नई दिल्ली द्वारा अनुदानप्रदत्त; डाक्टर शारदा जैन (सेवाग्राम विकास संस्थान, 1 दरियागंज, नई दिल्ली-110 002) द्वारा संपादित व प्रकाशित तथा इन्द्रप्रस्थ प्रेस (सी.बी.टी.), नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 में मुद्रित।

हमारी बात

समय-समय पर हम अपने पाठकों के पत्र प्रकाशित करते रहे हैं। कुछ गांवों की बहनों ने मिल कर 'सबला' के लेखों और कहानियों पर बातचीत की। उनकी राय भी हमने छापी। इन सबके ज़रिए हमें उनकी सोच का पता लगता है। अपनी सार्थकता या कमियों का अहसास होता है।

कई बार हमारी बहनों को लगता है कि यह सब पढ़ने में बहुत अच्छा है पर करना आसान नहीं। बिल्कुल ठीक! संघर्ष का रास्ता कभी भी आसान नहीं होता। पर उसका यह मतलब नहीं कि वह असंभव है। 'सबला' के लेखों के कई पात्र हमारे आपके जैसी हाड़ मास की इंसान हैं। कब, कौन, किस घड़ी में इरादों और विश्वासों की ताक़त पैदा कर पाएगी यह कहा नहीं जा सकता।

यह बात सौ पैसे सच है कि जब बलात्कार की शिकार औरत पुलिस थाने या अदालत जाती है तो उसका रास्ता कांटों से भरा होता है। खुलेआम उसके चाल-चलन पर शक किया जाता है। दस में से नौ मामलों में मुकदमे बरसों चलते रहते हैं। औरत को सिवाए बदनामी और दुख के कुछ नहीं मिलता। पर हमें याद रखना चाहिए वह एक मामला जिसमें अपराधी को सज़ा मिलती है, उससे न्याय का रास्ता खुलता है। लोगों की सोच और रवैया थोड़ा ही सही, कुछ तो बदलता है।

आज अगर दस में से एक को न्याय मिलता है तो वह दिन भी आएगा जब दस में से नौ को न्याय मिलेगा। आज न्याय न पाने वाली दुख, बदनामी और बेइज्जती उठाने वाली हर अनाम औरत इस संघर्ष के लिए जलने वाली एक मशाल है। जिससे रौशन होंगे रास्ते हमारी बेटियों के, उनकी बेटियों के। क्या हुआ अगर हम अपनी जिंदगी में वह दिन न भी देख पाएं। अन्याय के आगे डट कर खड़े होने का संतोष लेकर तो जिएंगी।

वीणा शिवपुरी

इतिहास से सवाल

मुझे है इतिहास से सवाल
करने जाते जब मर्द शिकार
क्या बैठी रहती थी औरत
धरे हाथ पर हाथ
नहीं मिलता था जब शिकार
कौन करता था तब
रोटी का इंतज़ाम
क्या बनी नहीं वह पहली किसान?

मुझे है इतिहास से सवाल
जब लड़ाइयों में मरकट जाते थे मर्द
कौन करता था देखभाल
मासूम बच्चों, बड़े बूढ़ों की।
करती दिखती जो विश्व का
आज दो तिहाई काम
है क्यों नहीं
इतिहास में उसका नाम?

क्या उसकी अस्मिता की आवाज़
नहीं कर दी गई बंद
जान बूझकर नकारा गया उसका वजूद
नक्कारखानों में दबी तूती की आवाज़
बोल, बोल इतिहास
क्या है तेरा जवाब?

सुहास कुमार

हमारा दिवस—महिला दिवस

जिंदाबाद बहनों! अपना दिन आ गया है। हर साल की तरह हम मिल-जुल कर अपनी आवाज उठा रही हैं—यौन-हिंसा, परिवार-कोर्ट की भूमिका, महंगाई, काम व मज़दूरी तथा सरकार की नीतियों पर!

हम जुलूस निकालेंगी, सभा करेंगी, नुक्कड़ नाटक करेंगी।

धाड़ क्षेत्र महिला मोर्चा, सहारनपुर की हिंदू, मुसलमान, इसाई, सब बहनों ने मिलकर महिला दिवस मनाया।

सभा में चर्चा हुई—धर्म से हम क्या समझते हैं। अपने अंदर झांकें।

धर्म के नाम पर हमें दबाया जाता है। (शाह बानो केस)

महिला आंदोलन व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों पहलुओं से जुड़ा है।

भजन, प्रार्थना और नृत्य हुए।

दर्पण संस्थान, गांव किरांव

महिलाओं की साप्ताहिक पंचायतों में लिए गए निर्णयों के अनुसार तहसील मुख्यालय घाटमपुर में महिला दिवस मनाया गया। अलग-अलग गांवों से ट्रैक्टरों में सवार होकर रुकते रुकाते, मौज मनाते दोपहर तक महिलाएं घाटमपुर पहुंचीं।

लगभग 200 महिलाओं और 50 बच्चों ने भाग लिया। ढोलक मजीरे के साथ जागरण गीत गाए गए, नुक्कड़ नाटक हुए व भाषण दिए गए। गांव किरांव, कमंडलपुर,

मुस्तफाबाद, रामपुर, दौलतपुर तथा सुजानपुरा में 2-3 दिन पहले से ही महिला दिवस की तैयारियां शुरू हो गई थीं

सदियों से हम सह रही हैं
और न सह पाएंगी।
ठान ली है अब लड़ने की
गर लड़कर ही जी पाएंगी
अब बना पर्दों का परचम
हर जगह लहराएंगी।
हम यहां इंसानियत का,
राज जल्दी लाएंगी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के दिन गगनभेदी नारों के साथ सहारनपुर शहर के मुख्य बाज़ार से गुजरता हुआ महिलाओं का विशाल जुलूस सबके लिए अचरज की बात थी। सब अचरज से देख रहे थे क्योंकि इससे पहले शहर में महिलाओं को इस तरह से नारे लगाते हुए पहले कभी नहीं देखा गया था।

है 8 मार्च का नारा
साल का हर दिन हो हमारा
भाषण नहीं हमें राशन चाहिए
दान नहीं हमें रोज़ी चाहिए।

गरीब हमारी जिंदगी,
हम मेहनतकश मज़दूर
मेहनतकश मज़दूर
क्यों हम इतने मजबूर।

सुहास कुमार

□

जागोरी ने मनायो री अपनो दिवस

''अपना दिन हम मनाएं तो बड़ा मज़ा आए
सखियां मिलजुल के गाएं तो बड़ा मज़ा आए''

इस साल आठ मार्च के दिन हमको बहुत मज़ा आया। ढेर सारी औरतें अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के लिए इकट्ठी हुई थीं। वैसे तो मार्च के पहले सप्ताह में रोज़ कहीं न कहीं औरतें अपना दिवस मना रही थीं। कभी दिल्ली विश्वविद्यालय में, तो कभी बस्तियों में। सात मार्च को बहुत सी संस्थाओं व समूहों ने मिल का जुलूस निकाला था।

फिर आया 8 मार्च। उस दिन जागोरी संस्था ने सारी बहनों को बुलावा भेजा था अपना दिन मनाने के लिए। जगह थी—सरोजिनी नगर बाजार। समय था—शाम साढ़े चार बजे।

खूब औरतें आईं। छोटी-बड़ी, मध्यवर्गीय और बस्तियों की, कुछ खूब पढ़ी-लिखी, कुछ निरक्षर। साझी बात एक थी। सभी औरतें थीं और आठ मार्च उनका अपना दिन था। सच में मेला था बहनों का। इस बार जागोरी ने औरतों के साथ होने वाली यौन हिंसा के खिलाफ आवाज़ उठाने का फैसला किया था। अपना विरोध जतलाने के लिए बहुत सी बहनों ने काले रंग के कपड़े पहन रखे थे।

जागोरी की पुकार थी—

यौन हिंसा पर बात करेंगे

सबका जवाब था—

अब ना चुपचाप रहेंगे

बस, सड़क, दफ्तर, यहां तक कि घर के अंदर भी छोटी लड़कियों से लेकर बूढ़ी औरतों के साथ यौन अत्याचार होते हैं।

हर वक्त वे इस डर के साथ जीती हैं कि कहीं कुछ हो न जाए। घरवाले भी रोक-टोक और बंधन बढ़ाते हैं। समाज उनके चारों ओर लक्ष्मण रेखाएं खींचता है।

दोष किसका है? शिकार का या अपराधी का?

हमें अपनी घूमने-फिरने की आजादी चाहिए। चाहे हम शहर की औरत हों या गांव की। दफ्तर में काम करती हों या खेत में। किसी को हक़ नहीं हमारी मर्जी के बगैर हमें छुए भी। सरकार और कानून की जिम्मेदारी है कि हर इंसान को ऐसी सुरक्षा दिलाए।

गीत और नाटक

सब बहनों ने इकट्ठा होकर गीत गाए, नारे लगाए और पर्चे बांटे।

जागोरी ने औरतों के साथ होने वाली हिंसा और उनकी डर से भरी जिंदगी के बारे में छोटा-सा नाटक दिखलाया। 'सहेली' और 'अलारिपु' नामक संस्थाओं के नाटक भी हुए। अंधेरा पड़े बाद सभी बहनों ने हाथ में जलती हुई मोमबत्तियां और मशालें पकड़ी और निकल पड़ी एक जुलूस की शक्ल में। जोश और उमंग से भरी हुई गीत गाती और नारे लगाती हुईं। यह जुलूस दिल्ली की मुख्य सड़क रिंग रोड़ से गुजर कर मेडिकल इंस्टीट्यूट के चौराहे पर थमा।

सभी बहनों ने एक बड़ा गोल घेरा बनाया। घेरे के बीच में शांति और कमला गीत गा रही थीं, नारे लगा रही थीं। चारों ओर खड़ी औरतें उनके गीतों और नारों को दोहरा रही थीं। कुछ नाच रही थीं, अपनी मशालें लहराती हुईं। रात-दिन बसों, गाड़ियों के भोंपू से गूंजने वाले चौराहे पर आज नारीवादी गीत और नारे गूंज रहे थे।

"तोड़ तोड़ के बंधनों को
देखो बहनें आती हैं
ओ देखो लोगो
देखो बहनें आती हैं
आएंगी जुल्म मिटाएंगी
वो तो नया ज़माना लाएंगी।"

एक समां बंध गया। शायद दिल्ली में रस की ऐसी बरसात पहले कभी नहीं हुई। आते-जाते लोग थम गए। ऐसा लगा एक घंटे के लिए जैसे वक्त भी रुक गया। हर औरत ताक़त और आत्म विश्वास से लबालब भर गई। बहनापे की मीठी सुगंध में डूब गई। उस दिन मिली ताक़त और दोस्ती का खुमार अब तक छाया हुआ है।

—वीणा शिवपुरी

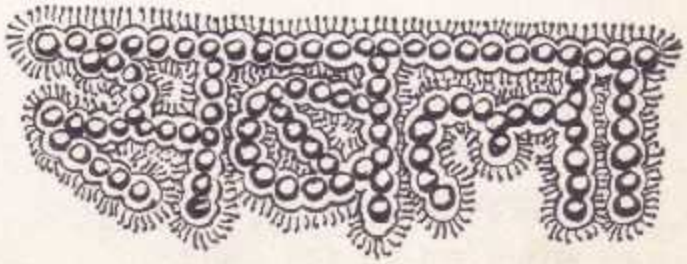

जागोरी की पाती

रुको ठहरो सुनो
आज अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस है
पूरे विश्व में हम सभी औरतों का
अपना एक दिन
प्रतीक ही सही, शुरूआत ही सही
अपना है, हमारा है
हर साल रुक कर सोचते हैं
क्या हो रहा है हमारी जिंदगी में
क्या खोया क्या पाया है हमने
कौन से हक़ छिन रहे हैं
कौन से हमले हो रहे हैं
आज सवाल है हमारा
हमसे तुमसे हर औरत और मर्द से
कहां सुरक्षित हैं हम औरतें
जिधर देखो जहां देखो
यौन हिंसा बलात्कार की खबरें
बसों में छेड़खानी, घरों में मार-पीट
रातों के अंधेरे में चलने में परेशानी
न दिन हमारा न रात हमारी
नई आर्थिक नीतियां
औरत को बेरोजगार करने की रीतियां
मुनाफे के लिए नंगे इश्तिहार की कुरीतियां
वैश्यावृत्ति बढ़ाने की प्रवृत्तियां
विकास के झांसे से हमें कमजोर बनाने की
चालाकियां
औरतों के शरीर के साथ नई नई घातें
हम पर ही प्रयोग हमसे ही धोखा
परिवार नियोजन के नाम पर व्यापार है घिनौना
हमसे तो पूछो क्यों हम इनसे घबराते
हमें शरीर पर अपना हक़ चाहिए
बगैर डर के आने जाने का माहौल चाहिए
हमें हमसे छिनी हुई सड़कें चाहिए
जो हमारे लिए सुरक्षित हो अपना हो
हमें ऐसा परिवार, पड़ौस और समाज चाहिए

हम इन अंधेरों को चीरना चाहते हैं
उजालों को बिखेरना चाहते हैं
तुम सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं
हर उम्र हर वर्ग हर धर्म की औरत की
आवाज है ये

लौ जलती रहे, हमारी लड़ाई चलती रहे
आठ मार्च से हर दिन हर पल हो हमारा
एक नया सवेरा मेरा तुम्हारा

—जागोरी समूह

मैं औरत हूं

मैं औरत हूं, उपेक्षा तले पली औरत
उपेक्षा सीमा पार कर,
मर्यादा का कफन उतार कर
आई हूं, अब आंधी बनकर
शब्द-कोष न्योछावर कर
मुझे भी मिट्टी समझ, अहम् ने रौंदा
अमानुषों का, फिर भी सजा घरौंदा
निर्मम समाज ने हर युग में
मुझ ही को दबोचा
असली गुनहगार बार-बार बचा
हर युग में दी सीता ने अग्नि-परीक्षा
मांग-मांग कर दया की भिक्षा
मैं औरत हूं, अपेक्षा की जंजीरों से बंधी औरत।

—प्रगति पाटील

'सबला' के पुरुष पाठकों के नाम एक पत्र

प्रिय मित्रो,

'सबला' तो आप कई महीनों/सालों से पढ़ रहे हैं पर आपसे मुखातिब होकर सीधी बात करने का यह पहला मौका है।

इस अंक से हम 'सबला' में एक नये स्तंभ की शुरुआत कर रहे हैं, इसमें पुरुषों से बातचीत होगी, पुरुषों के विचार छापे जाएंगे। उन पुरुष समूहों की रिपोर्ताज होंगी जो समाज में स्त्रियों की भूमिका, स्थिति सुधारने की कोशिश कर रहे हैं।

हमारा अंदाजा है कि 'सबला' पढ़ने वालों में आधे से अधिक पुरुष हैं। 'सबला' की कई हज़ार प्रतियां जन शिक्षण निलियमों में जाती हैं, जिन में अधिकतर कार्यकर्ता और सदस्य पुरुष हैं। बहुत से पुरुष अध्यापक, ग्राम सेवक, स्वयं-सेवी संस्थाओं के पुरुष कार्यकर्ता भी 'सबला' पढ़ते हैं। हमें इस बात की बहुत खुशी है कि आप सब 'सबला' पढ़ते हैं। आपको तथाकथित "महिलाओं की समस्याओं" में रुचि है। हमारा मानना है कि विचारशील, संजीदा पुरुषों का नारी आंदोलन को समझना, उसमें सहायता करना और उसके साथ जुड़ना बहुत ज़रूरी है।

सच तो यह है कि औरतों की सभी समस्याएं, सामाजिक समस्याएं हैं, यानि वे सभी, स्त्री और पुरुषों की सांझी समस्याएं हैं। उन्हें केवल स्त्रियों की समस्या मानना ग़लत है। अगर औरतों पर बलात्कार होते हैं, उन्हें घरों में पीटा जाता है, उनके साथ सड़कों पर, दफ्तरों में, फैक्टरियों में छेड़खानी होती है तो इसमें क्या पुरुषों की भूमिका नहीं है? अगर हमारे घरों में लड़कियों की पैदाइश पर मातम छा जाता है, लड़कियों को पैतृक संपत्ति नहीं दी जाती, उन्हें पढ़ने लिखने का पूरा मौका नहीं दिया जाता, इस सब में क्या पुरुषों का हाथ नहीं है? इस सब का असर क्या हमारे परिवार और समाज पर नहीं पड़ता?

समस्या स्त्रियों की नहीं है। समस्या है स्त्री-पुरुष संबंधों में मौजूद ऊंच-नीच, गैर-बराबरी की।

पितृ-सत्तात्मक समाज

हमारा समाज पितृ-सत्तात्मक है। परिवार, धर्म, शिक्षा, क़ानून, राजनीति, राजसत्ता सब में पुरुष हावी हैं। सारे ढांचे पुरुषों के आधीन हैं और विचारधारा भी पितृ-सत्तात्मक है। हमारा समाज यह मानता है कि पुरुष स्त्री से ऊंचा व उत्तम है, वह स्त्री का मालिक, पति, स्वामी है। स्त्रियों को हमेशा पुरुषों के आधीन व उनके नियंत्रण में रहना चाहिए। यह विचारधारा स्त्रियों को पुरुषों की संपत्ति का ही हिस्सा मानती हैं। यहां तक कि स्त्री के शरीर पर भी पुरुषों का हक़ माना जाता है।

इस विचारधारा को पनपाने में पुरुषों और स्त्रियों, दोनों का हाथ है। यानि समस्या सिर्फ औरतों की नहीं है और बदलाव सिर्फ़ औरतों को बदलने से नहीं आ सकता। स्त्रियों की हालत तभी सुधर सकती है जब पितृसत्ता बदले, जब समाज की

धारणाएं बदलें, और ये तभी बदलेंगे जब स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियां सबके विचार, व्यवहार, अधिकार,कर्त्तव्य और परिभाषाएं बदलेंगी।

मर्दों को बदलो

गांव की औरतें भी हमेशा हमें यही कहती हैं—"बहन जी हम तो आपकी बात समझती हैं पर आप हमारे मर्दों को समझाओ। उनको समझाए बिना कुछ नहीं हो सकता।" गांव की एक बहन बोली—"ये आपके गीतों वाला कैसेट मेरे मरद के रेडियों में लगाओ। जब तक उसके भेजे में बात नहीं बैठेगी, तब तक बड़ी मुश्किल है।"

एक और बहन ने कहा—"गांव के पंडितों से कहो लड़की की पैदाइश पर थाली बजाने को कहें, अंतिम संस्कार करने का हक़ लड़कियों को भी दें।"

इन सब बहनों की बात वाजिब है। औरत और मर्द एक तराजू के दो पलड़े हैं। एक पलड़े में हलचल होगी तो दूसरा अपने आप हिलेगा, उसमें ऊंच-नीच होगी। कई लोग औरतों के काम के बोझ को कम करने की बात कहते हैं। यह बोझ तभी कम होगा जब घर के मर्द थोड़ा बोझ और सहने को तैयार होंगे। औरतों के अधिकार तभी बढ़ेंगे जब औरों के कुछ कम होंगे। अगर दोनों राज़ी से बदलाव लाएं तो परिवार में क्लेश कम होगा पर अगर पुरुष बदलने से इंकार करें और औरतें बदलाव चाहें तो झगड़ा होगा ही। इसीलिए यह ज़रूरी है कि स्त्री-पुरुष संबंधों पर पुरुषों से भी बातचीत हो।

पुरुषों की भूमिका

हमारा यह भी मानना है कि पुरुषों के साथ इस प्रकार की बातचीत अगर कुछ समझदार और संवेदनशील पुरुष करें तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। पुरुष एक दूसरे के साथ ज्यादा खुल कर बातचीत कर सकते हैं। अगर एक पुरुष दूसरे को समझाएगा तो शायद उनको बात ज़्यादा अच्छी तरह समझ में आएगी।

आज जगह-जगह महिला मंडल, महिला समूह बन रहे हैं जहां औरतें मिल कर अपनी समस्याओं पर बातचीत करती हैं। इसी तरह के पुरुष समूहों की ज़रूरत है जिनमें पुरुष पितृसत्ता पर विचार करें, अपने अधिकारों, ज़िम्मेदारियों, विचारधारा, अपने व्यवहार पर बातचीत करें। इस प्रकार के पुरुष समूह ऐसे पुरुषों पर दबाव डालें जो अपनी पत्नी के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, या और औरतों के साथ बदतमीजी, छेड़खानी या किसी और प्रकार का बुरा व्यवहार करते हैं। जब तक मर्दों की तरफ से इस तरह की पहल नहीं होगी, स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलाव जल्दी नहीं आएगा और कटुता भी ज़्यादा होगी।

हमें यह सुनकर बहुत अच्छा लगा कि बंबई में कुछ पुरुषों ने पहल की है एक ऐसा पुरुष समूह बनाने की जो औरतों पर होने वाली हिंसा के खिलाफ़ काम कर रहा है। हम 'सबला' के अगले अंक में इस समूह के बारे में और जानकारी देंगे।

हमारे सभी पुरुष पाठकों को हम निमंत्रण दे रहे हैं स्त्री-पुरुष समस्याओं, संबंधों पर अपने विचार लिख कर भेजने का। इस पत्र का भी जवाब दें ताकि हम आप के विचार जानें। अगर हो सके तो हम सब मिल कर एक ऐसे समाज की रचना कर सकें जहां स्त्री-पुरुष दोनों इज्ज़त से जी सकें, पनप सकें, जहां इंसाफ हो।

शुभकामनाओं सहित

कमला भसीन

साल में एक बार बासौड़ा खाकर माता पूज लो। खसरे का टीका लगवाने की क्या ज़रूरत है। बिल्ली रास्ता काट गई या किसी ने छींक दिया तो रुक जाओ, चाहे गाड़ी छूट जाए। पेट में दर्द है तो गर्म लोहे के सरिए से डाम लगा दो, डाक्टरी-दवाई की क्या ज़रूरत है।

जाल में फंसे

पता नहीं कब तक हम इन अंधविश्वासों के जाल में फंसे रहेंगे और अपना नुकसान करते रहेंगे। यह सच है कि कई पुराने घरेलू नुस्खे, दादी-नानी की दवाइयां बहुत अच्छी हैं। छोटी-मोटी बीमारियों में पहले हमें इन्हें ही आजमाना चाहिए। चाहे अदरक-तुलसी हो या अजवैन-काला नमक, सब जानी पहचानी फ़ायदेमंद चीजे हैं। लेकिन गोबर लगाना, मिर्ची की धूनी देना, मारना-पीटना या डाम लगाना बीमारी का इलाज नहीं है।

गांव की बड़ी-बूढ़ी दाइयों और वैद-हकीमों की हमें आज भी ज़रूरत है। लेकिन टोने-टोटके करने वाले ओझा और झाड़-फूंक करने वाले भोपों की कोई ज़रूरत नहीं है।

कोदरी बाई

राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के एक गांव में रहती थी कोदरी बाई। उम्र थी करीब चालीस साल। कोदरी बाई के कोई बच्चा नहीं था। वह आराम से अपने पति के साथ रहती थी। कोदरी बाई का पति कचरू भाई अनपढ़ था। उसका देवर खेमराज स्कूल में मास्टर था।

कुछ दिन से कोदरी बाई की तबीयत खराब थी। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। डाक्टर का इलाज चल रहा था। लेकिन उसी बीच अपने अंधविश्वास की वजह से कोदरी बाई भोपे के पास गई। उसने सोचा भोपा उसे जल्दी ठीक कर देगा। भोपा कुछ मंत्र पढ़ता, कुछ पानी छिड़कता और फिर दोबारा आने को कहता। कोदरी बाई उसके पास दो बार हो आई थी। भोपा ने उसे फिर अगले रविवार को बुलाया।

आखिरी रविवार

हमेशा की तरह जब कोदरी बाई भोपा के पास गई तो वहां जाकर लेट गई। कोदरी बाई की एक सहेली भी साथ गई थी। वह भी पास बैठ गई। भोपा ने कोदरी बाई के पेट पर एक नीबू रखा। उस नीबू पर टिकाई एक तलवार और पढ़ने लगा कोई मंत्र।

भोपा का नाटक चल ही रहा था कि जिस पाटिए पर भोपा बैठा था वह खिसक गया। इधर पाटिया खिसका, उधर भोपे का हाथ हिला। नीबू तो गिरा एक तरफ और तलवार धंस गई पेट में। एक झटके में कोदरी बाई बैठ गई। वो दर्द के मारे चिल्लाई। तलवार बाहर खींची तो हाथ भर ऊंची खून की फुहार निकल पड़ी।

ज़ालिम भोपा

इतनी बड़ी गड़बड़ी करने पर भी भोपा कोदरी बाई को अस्पताल नहीं ले गया। अपनी गलती मान लेता तो उसके पास इलाज के लिए कौन आता। उसने इतने भारी घाव पर सिंदूर लगा दिया और बोला सब ठीक हो जाएगा।

भोपा अब दूसरे मरीजों को बुद्धु बनाने में लग गया। इधर कोदरी बाई के पेट से भलभल खून बहता जा रहा था। उसकी सहेली दौड़कर एक जानकार को ले आई। दोनों मिल कर कोदरी बाई को गांव लाए। गांव के डाक्टर ने कहा—'हालत बहुत बिगड़ चुकी है शहर के अस्पताल ले जाओ, खून चढ़ाना पड़ेगा।'

कोदरी बाई सिधारी

बेचारे कचरू भाई का तो चिंता के मारे बुरा हाल। कोदरी बाई का देवर टैक्सी लाने के लिए दौड़ा! जब तक टैक्सी आई कोदरी बाई के प्राण

छूट गए। सारा गांव गुस्से से भर गया। अच्छी भली कोदरी बाई कैसे मर गई। एक छोटी-सी बीमारी का इलाज कराने गई तो जान भी नहीं बची।

पुलिस में रपट लिखाई। कोदरी बाई के शव की चीर-फाड़ हुई। फिर घरवालों ने शरीर का क्रिया-कर्म कर दिया। पुलिस ने भोपा को गिरफ्तार कर लिया।

मुकदमा चलेगा, लेकिन क्या कोदरी बाई का जीवन लौट सकता है? भोपा सिर्फ एक तो नहीं। गांव-गांव में कितने भोपे रोज लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। लोग उनके पास जाते हैं तभी उनकी दुकानदारी चलती है।

हमारे शरीर की कितनी बीमारियां ऐसी हैं जो बगैर दवाई के कुछ समय में अपने आप ठीक हो जाती हैं। उन रोगों की मियाद कम होती है। हमारे शरीर में भी रोग से लड़ने की ताकत होती है। बस ऐसे ही जो लोग ठीक हो जाते हैं वे सोचते हैं भोपे के मंत्र-जादू ने ठीक किया है। इस तरह यह अंधविश्वास बढ़ता जाता है।

हम सबको अपने आपसे सवाल पूछना चाहिए—जो कोदरी बाई के साथ हुआ क्या वह हमारे साथ नहीं हो सकता?

(साथिन रो कागद, बांसवाड़ा पर आधारित)

सुनोगी मेरी कहानी?

(तेलंगाना आंदोलन की भागीदार की आत्मकथा)

दासी का जीवन

मेरा नाम कमलम्मा है। मेरा गांव मैनाला है। हमारा परिवार दासों का है। पहले मेरी मां और नानी भी ज़मीदारों के घर में दासी थी। उनमें से किसी की शादी नहीं हुई। दासियों की शादियां नहीं होती थीं। ज़मीदार घर का कोई आदमी उन्हें रख लेता था। बच्चे भी हो जाते। बहुत पुराने समय में जब बड़ा दुख पड़ा तो मेरी नानी को एक माप धान और एक रुपए के लिए ब्राह्मण परिवार को बेच दिया था। तभी से उसके बच्चे और बच्चों के बच्चे भी वहीं दास बनते चले गए।

मेरी मां को ज़मीदारों के एक चचेरे भाई ने रख लिया था। मेरे पिता भले आदमी थे। उन्होंने हम सबका खर्चा उठाया। हम सब वहीं काम करते रहे। घर की मालकिन चाहती थी कि मुझे अपनी बेटी की ससुराल में दासी बना दे, पर मेरे पिता ने नहीं भेजने दिया। मेरी शादी भी एक दास से हुई। मेरी सास भी दासी थी।

अपमान भरा जीवन

मेरा पति जो लम्बा-चौड़ा मर्द था उसे भी मालकिन मारती थी। खुद मांस खाते पर उसे खाने को इमली की चटनी भी नहीं देती थी। ऐसी थी बंधुआ दासों की जिंदगी। वो खुद बढ़िया खाट पर बैठते, हम ज़मीन पर। उनकी उल्टी या टट्टी साफ़ करते। बड़े कष्ट का जीवन था। बड़े अपमान का जीवन था। इसी वजह से हम कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ गए। सबसे पहले मेरा बड़ा भाई आंदोलन में आया, फिर हम सब।

संघर्ष का जीवन

यह निज़ाम के राज का जमाना था। आंदोलन के कार्यकर्ता गुट बना कर छिप कर घूमते। यहां वहां रास्ता रोक कर निज़ाम के आदमियों को कर वसूली से रोकते थे। मेरा भाई भी उनमें था। निज़ाम के सिपाहियों ने पूरे गांव को आग लगा दी। मेरा बेटा तीन महीने का था। पहले मेरे पति ने और फिर मैंने भी आंदोलन का काम करना शुरू कर दिया। अपने दस महीने के बच्चे को भी मैंने दूर भेज दिया। कुछ दिन बाद मेरा दूध सूख गया। मेरा बच्चा ननद के पास पला।

हमारे ऊपर बार-बार हमले होने लगे। आखिर हमको जंगल में छिपना पड़ा। मैं कम उम्र की थी। मुझे जंगल जाने में डर लगा। सोचा, पता नहीं इतनी मुश्किल जिंदगी जी पाऊंगी या नहीं। आखिर औरत थी। रातों को दौड़ना, जंगलों में छिपना था। अगर पकड़ी गई तो मार दी जाती। फिर भी मैं साथियों के साथ-साथ घूमती रही। तभी मेरे पेट में बच्चा ठहर गया। ऐसे ही दिन निकलते रहे। दर्द हुए तो साथी एक बूढ़ी औरत को ले आए। वहीं झाड़ियों के पीछे मैंने बच्चा जना। मैं पार्टी के लिए काम करते हुए घूमती रही और बच्चे को भी पालती रही।

हमारे नेताओं ने कहा—

"कमलम्मा या तो तुम यह बच्चा किसी के पास रखवा दो या हमें छोड़ दो। बच्चा है, कभी न कभी रोएगा। हम सब पकड़े जाएंगे। पर हां याद रखो अगर तुम पकड़ी गई तो वे लोग तुम्हारे टुकड़े कर देंगे। मिर्ची भर देंगे और तड़पा-तड़पा के मारेंगे।"

मैंने सोचा—"मरना है तो पति के साथ और पार्टी के कामरेड साथियों के साथ मरूंगी। बच्चे को किसी को दे दूंगी।"

बड़ा कठिन फैसला

हम लोग एक गांव में आए। वहां एक आदमी के तीन बेटे मर गए थे। मैंने उसके हाथों में अपना बेटा रखा और फिर मुड़ कर नहीं देखा। आज उस बात को छत्तीस साल हो गए हैं। पता नहीं मेरा बच्चा कहां है, कैसा है? क्या कहूं अपने त्याग के बारे में। सबने कहा तुम्हारा नाम इतिहास में लिखा जाएगा। क्यों बच्चे का दुख करती हो। क्या मां के दिल को इससे शांति मिलती है?

मैं आदिवासियों के बीच काम करती थी। उन्हें विद्रोह के लिए समझाती और तैयार करती थी। बीमारों और घायलों को भी संभालती थी। मैंने हथियार उठा कर हमलों में हिस्सा नहीं लिया। मेरी सहेली वेंकटम्मा मर्दों के कपड़े पहन कर बंदूक लेकर साथियों के साथ मार-धाड़ के लिए भी जाती थी।

एक बार हमारा एक साथी पकड़ा गया। हम लोग अपनी जगह छोड़ कर भागे। पीछे से पुलिस का हमला हुआ। एक साथी को गोली लगी। हम सब दौड़े। बड़ी मुश्किल से उस दिन जान बची।

पार्टी का हुक्म

थोड़े ही दिनों में पार्टी ने तय किया कि आंदोलन रोक दिया जाए। हमसे कहा हम अपने हथियार डाल दें। हमारे साथियों ने कहा इससे तो हमको गोली मार दो। केरल और बंगाल से कम्युनिस्ट नेता आए। सबने कहा आंदोलन बंद कर के घर लौट जाओ। पार्टी ने हमें एक बैल और 120 रुपए दिए। हमारे पास घर-द्वार कुछ नहीं था।

मेरा पति नागी रेड्डी की नक्सलाइट पार्टी में काम करने लगा। उसे जेल हो गई। मैंने बहुत दुख और गरीबी झेली। मैं अब भी पार्टी में हूं। सारे आंध्रप्रदेश में घूम-घूम कर काम करती हूं। वैसे अब बूढ़ी हो रही हूं। अब इतनी शारीरिक ताकत नहीं बची।

वैसे सबसे बड़ी ताकत है इरादों की, विश्वास की। वह मेरे पास है।

(साभार—'वी वर मेकिंग हिस्ट्री' पुस्तक से)

राजस्थानी लोक गीत

अजी सुणो म्हारा घर वाला भरतार
था का मायर बाप थाने राख्या निरक्षर
कई दिन दिना सु करो थे मज़दूरी
काई राकी थांका मायर बाप भणवा की मजबूरी
अब सुणो म्हारा भरतार जद मैं आई थांके द्वार
साथ में लाई पाटी-पोथी कलम म्हारा भरतार

अणी गांव में भणाऊंगी लोग लुगाया म्हारा भरतार
थाने भी भणाउंगी जद थाको जमारो सुधरेगा भरपूर
मैं तो भणी 'सबला' थे भी भणज्यों थाको होगा भरपूर उद्धार
'सबला' ने भणवा सुं थाने मिलेगा नया चमत्कार
अब आई 'सबला' ने भणबा की बात
रामा पेमा खेमा करें चौपाल में बात।

हेमराज डांगी (प्रेरक)
निम्बाहेड़ा—राजस्थान

किताबें छूने पर अब तो नहीं डांटोगी

अनुराधा गुप्ता

मालती के यहां सोना की मां दस बरस से काम कर रही थी। उससे अपने सुख-दुख बांटती रही थी। उसकी राय लेती रही थी। एक दिन रामकली को चुप-चुप देखकर मालती से नहीं रहा गया। रामकली ने बताया कि वह सोना का ब्याह करना चाहती है और सोना है कि एकदम इंकार कर रही है।

मालती—तेरी छोरी की उम्र क्या है?

रामकली—यही कोई 11-12 बरस।

मालती (हंसकर)—तू अभी से उसका ब्याह कर देगी? पागल हो गई है क्या?

रामकली—गौना थोड़ी ही जल्दी करूंगी। रोज़-रोज़ अच्छे लड़के कहां मिले हैं।

मालती—लेकिन तुमने सोना के मन की बात पूछी। वह क्या चाहती है?

रामकली झाड़ू लगाती-लगाती रुक गई और मालती के पास आ बैठी। बोली—"उसका तो दिमाग फिर गया है। कभी कहती है डाक्टर बनेगी, कभी कहती है मास्टरनी बनेगी। सोते-सोते नींद में बड़बड़ाती है—सरकार, मेरे बापू को छोड़ दो। बापू कहां हो तुम। अब हम सच्ची गवाही कहां से लाएं?"

मालती—वह जो खेल खेलती होगी वही सपने में देखती है।

रामकली—इस सबकी जड़ में वह कोने वाला मकान है।

मालती—वह कैसे?

रामकली—मेरी बहन वहां काम करती है। उसे गांव जाना पड़ गया तो सोना को वहां एवजी काम करने भेजा। वहां उसकी उम्र की 3 छोरियां हैं। बस सारा दिन उनके संग-साथ से इसका दिमाग ही फिर गया है।

मालती—नहीं, यह बात नहीं है। वह आगे पढ़ना चाहती है। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। तुम्हारी तरह झाड़ू-पोछा, बर्तनों की सफाई करके जिंदगी नहीं काटना चाहती है। तुझे तो खुश होना चाहिए। उसके रास्ते की रुकावट मत बन। तू उसे मेरे पास ले आ, मैं बात करूंगी।

रामकली—बीबी जी और जो भी बात करो, उसे काम करने से मत रोकना। दो-चार घर काम करके 250-300 लावै है। वह भी बंद हो जाएगा तो पूरा कैसे पड़ेगा।

मालती—क्यों तेरा आदमी नहीं कमाता?

रामकली—अरे, वह ढंग से कमाता होता तो रोना ही काहे का था। जो कुछ कमाता है उससे ज्यादा पी-पा कर उड़ा देता है।

× × ×

एक दिन रामकली सोना को मालती के पास ले ही आई। साफ सुथरी फ्राक पहने, बाल संवरे हुए। आकर वह मोढ़े पर बैठ गई। रामकली ने उसे ज़मीन पर बैठने को कहा तो मालती ने रोक दिया। मालती ने सोना से बातचीत की तो सोना ने बताया—मैं खूब पढ़ना-लिखना चाहती हूं। मुझे रेखा और गीता ने पढ़ना-लिखना सिखाया।

आप मां से कहकर मुझे उन्हीं के यहां भिजवा दो।

रामकली काम से निबट चुकी थी। सोना से दूसरी जगह काम पर चलने की जल्दी मचाने लगी। मालती ने कहा कि वह फिर उससे फुरसत से बात करेगी।

इत्तफ़ाक से कुछ दिन बाद ही मालती के यहां बहुत से मेहमान आ गए। मालती ने रामकली से कहकर सोना को बुलवा लिया। उसके सलीके से काम करने से मालती को बहुत अच्छा लगा। उसने रामकली से कह कर सोना को अपने पास रख लिया। अब वह वहीं रहती, काम भी करती और पढ़ने भी जाती।

रामकली तो उस ओर से निश्चिंत हो गई थी। मगर पास पड़ोस वाले चैन लेने दें तब न। हर वक्त ताने देते। "अरी रामो, क्या बेटी को बूढ़ी करके ब्याहोगी। अब तू बड़े घर वालों की बराबरी करै है।"

रामकली फिर सोना के ब्याह की बात करने आ पहुंची। मालती ने पूछा—रामकली, इस वक्त शाम को कैसे आना हुआ?

रामकली—बीबी जी, सोना के लिए एक बड़ा अच्छा रिश्ता आया है। मेरे जेठ ने बताया है। बड़े अस्पताल में दवाई बांटने का काम करै है।

मालती—सोना, तू जा धोबी के लाए कपड़े संभाल। रामकली तू फिर ब्याह की बात करने आ गई। 6 महीने में उसकी परीक्षा है। उसे अपनी मेहनत का फल तो चखने दे।

× × ×

वक्त गुजरता गया। सोना ने 12वीं कक्षा पास कर ली। मालती के बहनोई ने उसकी एक दफ्तर में नौकरी लगवा दी। उसे 600 रु० महीने मिलने लगे। सोना बहुत खुश थी। उसके घर के सब दलिद्दर दूर हो जाएंगे।

मालती ने सोना के ब्याह की बात चलाई। उसी के कारखाने में काम करने वाला एकाउंटेंट लड़का उसने सोना के लिए पसंद किया। शुभ-लगन में सोना की शादी हो गई।

रामकली सोना का ख़त मालती के पास ही पढ़वाने को लाती थी। आज भी वह सोना का खत लेकर आई। मालती ने पढ़कर सुनाया—

मेरी प्यारी मां,

कल आंटी जी का पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई कि एक्सीडेंट से आई चोट अब करीब-करीब ठीक हो गई है। और तुम घर में चल फिर सकती हो। शरीर जब तक चलता रहे अच्छा है।

मां, तुमने यह कैसे सोचा कि मैं आंटी जी की शिक्षा को भूल जाऊंगी। घर की मान-मर्यादा पर आंच आने दूंगी। यह परिवार भी बहुत अच्छा है। हम सब मेलजोल से रहते हैं।

मेरी एक बात मानो। समय निकाल कर पढ़ना-लिखना सीखने की कोशिश करो। भाभी को इसके लिए कभी मत रोकना। वह सिलाई-कढ़ाई सेंटर जाकर ट्रेनिंग करना चाहती हैं, उन्हें ज़रूर करने देना।

बस, अब यहीं खत्म करती हूं। सब को सादर नमस्ते। भाभी और बच्चों को प्यार।

तुम्हारी बेटी
सोना

पुनश्च—मां, बस इतना और बता दो। भैया की किताबें छूने पर अब मुझे नहीं डांटोगी न। वर्ना भाभी क्या कहेंगी?

और मालती सोना की यह बात पढ़कर हंस पड़ी। और रामकली भी। □

नारी क्यों कैद हो?
बंद रोशन दान में
मर्दों के मान में
सभ्यता की शान में
नारी आज ढूंढती क्यों
जीवन धूप छांव में
शांति, शहर और गांव में
जगह पति के पांव में
नारी सहती क्यों?
सास की बात को
दहेज के आघात को
पति की लात को
नारी मत फंसी रह
संस्कृति के जाल में
परिवेश के जंजाल में
मौत के गाल में
नारी क्यों रोती?
जन्म के आधार पर
पूर्वजन्म संस्कार पर
कर्म के आधार पर
नारी क्यों ढोती?
झूठे पतिव्रत धर्म को
परंपरागत कर्म को
अंतर्हित मर्म को
नारी क्यों सोचती
जिंदगी आसान है
दियासलाई महान है
मिट्टी का तेल जहान है।
नारी तुम्हें बदलना है
अपनी हीन भावना को
नियति के हर पन्ने को
और आवेश में बहने को।

—शोभा कुमारी
बंगरहट सिंघिया (बिहार)

हिंसा क्या है?

आमतौर पर किसी भी तरह की मार-पीट, चोट पहुंचाने को हम हिंसा कहते हैं। हर कोई हिंसा से डरता है। हिंसा से शरीर को चोट लगती है। दर्द होता है। कभी-कभी हिंसा से शरीर के साथ मन को भी चोट लगती है। किसी की डांट से बिना शरीर को चोट पहुंचे भी मन को बहुत दुख होता है।

इस तरह से हमें पता लगता है कि हिंसा शरीर को नुकसान पहुंचाती है। इससे अपमान और बेइज्जती होती है। हिंसा के डर से भी लोग डरते हैं यानि जिस काम के करने से मार-पीट या डांट का डर हो वह करने से घबराते हैं।

औरतों के खिलाफ़ हिंसा

औरतों के खिलाफ़ जीवन से मरण तक हिंसा होती है। यह बात ठीक है कि समाज में पुरुष भी हिंसा के शिकार होते हैं। लेकिन खास बात यह है कि हिंसा के कई ऐसे रूप हैं जो सिर्फ औरतों के साथ होते हैं। मर्दों के साथ नहीं।

हिंसा को हम कई तरह से बांट कर देख सकते हैं। शारीरिक हिंसा और भावनात्मक हिंसा। शारीरिक हिंसा वह है जो शरीर को कष्ट पहुंचाए। भावनात्मक हिंसा वह है जो मन और भावनाओं को चोट पहुंचाए। हिंसा को समझने के लिए हम उसे घर के भीतर होने वाली हिंसा और घर के बाहर होने वाली हिंसा को दो भागों में भी बांट सकते हैं।

यह बड़े आश्चर्य की बात लगती है कि घर के भीतर भी हिंसा होती है। घर और परिवार वह जगह समझी जाती है जहां हरेक को आराम मिलता है। प्यार और हिफ़ाजत मिलती है। अगर

सच्चाई देखें तो औरत के खिलाफ सबसे ज्यादा हिंसा उसके अपने घर में ही होती है। उसे करने वाले उसके अपने रिश्तेदार होते हैं।

हिंसा—कोख से कब्र तक

आजकल लड़की पैदा हो उससे पहले ही उसे मारने का इंतजाम कर लिया जाता है। दो-चार सौ रुपए खर्च कर के लोग पेट के बच्चे का लिंग मालूम कर लेते हैं। अगर गर्भ में बेटी है तो गर्भ गिरवा दिया जाता है। पिछले कुछ सालों में हजारों लड़कियों को पैदा होने से पहले ही मार दिया गया है। गर्भ जल की जांच कर के या गर्भ की तस्वीर खींच कर बच्चे के बारे में बहुत कुछ मालूम किया जा सकता है। विज्ञान की इस नई तकनीक का इस्तेमाल लड़कियों के ख़िलाफ किया जा रहा है।

आज भी देश के कुछ हिस्सों में बेटी के पैदा होते ही उसे ज़हर पिला देते हैं या और किसी तरीके से मार देते हैं। यह हिंसा करने वाले खुद उसके मां-बाप या बड़ी-बूढ़ी औरतें होती हैं।

बच्ची अगर जी भी गई तब भी उसे न पूरी देखभाल मिलती है, न पूरा खाना। ऐसी कमजोर

लड़कियां किसी भी बिमारी का शिकार हो कर मर जाती हैं। सर्वेक्षणों से मालूम हुआ है कि अलग अलग उम्र के बच्चों में लड़कियां ज्यादा कमजोर और बीमार होती हैं।

घर के अंदर उनके साथ होने वाली मार-पीट, गालियां और अपमान तो आम बात है लेकिन उनका यौन शोषण भी कम नहीं। छोटी लड़कियों के साथ उनके अपने चाचा, मामा, भाई यहां तक कि बाप और दादा भी बलात्कार करते पाए गए हैं। ऐसी खबरें आमतौर पर छिपा दी जाती हैं। आजकल बहुत से महिला समूह इस हिंसा के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रहे हैं।

जल्दी, छोटी उम्र में शादी और बच्चों का बोझ डाल देना भी लड़की के साथ हिंसा है। उससे उसका बचपन छीन लेना, उसकी हंसी-खुशी, खेलना-कूदना सब पर रोक लगाना हिंसा नहीं तो और क्या है?

ब्याह कर ससुराल गई तो वहां भी हिंसा का संसार फलता-फूलता है। बात-बात पर पत्नी पर हाथ उठा देना पति अपना हक़ समझते हैं। एक तरह से समाज भी उन्हें यह हक़ देता है। अगर कोई पति अपनी पत्नी को कितना मारे-पीटे, सताए कोई उसे बचाने नहीं जाता। इसे अपराध नहीं, घरेलू मामला कह कर आंख बंद कर लेते हैं।

दहेज के लिए उसे जला दिया जाता है या सता-सता कर आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया जाता है। लड़कियों को खरीद-बेच कर जबरदस्ती वैश्या बना दिया जाता है। विधवा होने पर उसे जिंदा चिता पर बैठाने वाले या वृंदावन-

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और पक्की सीढ़ियों से नीचे धकेले जाने में
सिवा इसके कि घाव मन के भीतर भी
रिसते हैं।

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और ट्रक तले कुचले जाने में
सिवा इसके कि मर्द पूछते हैं—
'मज़ा आया था?'

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और फुफकारते सांप के काटने में
सिवा इसके कि लोग जानना चाहते हैं—
'तुम अकेली बाहर गई ही क्यों?'

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और कार दुर्घटना में टूटे शीशे से
उछल कर बाहर गिरने में
सिवा इसके कि बाद में कारों से डर नहीं लगता
डर लगने लगता है आधी मानव जाति से।

(अंग्रेजी से अनुदित)

मथुरा में भीख मांगने के लिए मजबूर करने वाले भी ज्यादातर सगे-संबंधी ही होते हैं।

विचार करने की बात

आज इस बात पर सोचना चाहिए कि परिवार किसे कहते हैं? परिवार कैसा होना चाहिए? क्या औरत के सुख और सुरक्षा की जिम्मेदारी परिवार की नहीं जिनके लिए वह अपना तन और मन दे देती है?

"घर घर में शमशान घाट हैं
घर घर में फांसी घर हैं
घर घर में दीवारें हैं
दीवारों से टकरा कर
गिरती है वह
गिरती है आधी दुनिया
सारी मनुष्यता गिरती है।"

वीणा शिवपुरी

जुर्म बलात्कार का

सन् 1983 के संशोधन के बाद बलात्कार क़ानून के तहत् जुर्म तब माना जाएगा जब कोई पुरुष नीचे लिखी स्थितियों में एक स्त्री के साथ संभोग करता है।

1. संभोग महिला की इच्छा के खिलाफ़ हो। उसकी सहमति के बिना हो।
2. महिला की सहमति डरा-धमकाकर ली गई हो। उसे या उसके प्रियजन को जान से मारने की धमकी या गहरी चोट पहुंचाने की धमकी आदि दी गई हो।
3. महिला की सहमति उन हालात में ली गई हो जब वह महिला नशे में हो या मानसिक रूप से असंतुलित हो और सहमति के नतीजे को न समझे।
4. महिला की सहमति के साथ जब उसे धोखा देकर विश्वास दिलाया हो कि वह दोनों क़ानूनन पति-पत्नी हैं।
5. यदि लड़की नाबालिग है यानी उसकी उम्र 16 साल से कम है तो चाहे उसकी सहमति हो या न हो उसे बलात्कार माना जाएगा।

धारा 376 के तहत् यदि—

(अ) पुलिस अधिकारी बलात्कार का दोषी है यदि यह जुर्म—
   1. जहां वह काम करता है—थाने के क्षेत्र में किया गया हो।
   2. किसी भी थाने के अहाते में किया गया हो/ चाहे वह अधिकारी उस थाने में काम करता हो या न करता हो, वहां ड्यूटी पर हो या न हो।
   3. उस महिला पर हो जो उस अधिकारी की या उस अधिकारी के मातहत कर्मचारी की हिरासत में हो।

(आ) सरकारी कर्मचारी होने के नाते अपनी सरकारी स्थिति का लाभ उठाता है। सरकारी तौर पर अपने अधीन कर्मचारी महिला के साथ बलात्कार करता है। या

(इ) क़ानून के अनुसार स्थापित जेल, हवालात या दूसरी हिरासत की जगह या महिला/बाल

संस्था के बंदोबस्त में अधिकारी/कर्मचारी अपनी सरकारी या गैर-सरकारी स्थिति का फायदा उठाकर उन जगहों पर संस्था में रहने वाली लड़कियों, औरतों के साथ बलात्कार करता है।

(ई) अस्पताल के बंदोबस्त में अधिकारी/कर्मचारी अपनी स्थिति से लाभ उठाकर अस्पताल में किसी महिला से बलात्कार करता है।

(उ) समूह बलात्कार किया गया हो।

यदि आप बलात्कार की शिकार हैं तो आप क्या करें?

1. फ़ौरन पास के डाक्टर (कोई भी रजिस्टर्ड डाक्टर, सरकारी डाक्टर होना ज़रूरी नहीं है) के यहां जाकर अपनी डाक्टरी जांच कराएं। उसकी रपट की कापी ज़रूर लें।
2. जल्दी से जल्दी पास के थाने में प्रथम सूचना रपट दर्ज कराएं। अपने बयान की यानी रपट की एक कापी ज़रूर मांग लें। यह आपका क़ानूनी अधिकार है।
3. ज़रूरत पड़ने पर, अपने वकील को साथ लेकर थाने जाएं। अपनी पसंद का वकील तय करना आपका बुनियादी हक़ है।
4. आपसे जिस व्यक्ति ने बलात्कार किया है, उसकी डाक्टरी जांच की फौरन मांग करें। इससे मुजरिम के बदन पर से सबूत लेने में मदद मिलेगी।
5. जब तक आपकी डाक्टरी जांच न हो जाए न तो नहाएं, न कपड़े बदलें।
6. मुजरिम की कोई भी चीज़ जैसे वहां मिले कपड़े, जूते, चप्पल, चश्मा, रूमाल आदि, उसे पुलिस को जमा करा दें।

7. जब तक पुलिस अधिकारी बलात्कार की घटना के स्थान की पूरी रपट तैयार न कर ले उस जगह को वैसा ही रहने दें। निरीक्षण करने वाला तो जगह में ही जुर्म होने का प्रमाण ढूंढ सकता है। उसी के आधार पर जुर्म की रपट लिखेगा।
8. पुलिस थाने अकेली न जाएं। पुरुष संबंधी या मित्र या फिर कुछ महिला मित्र साथ ले जाएं। हो सके तो किसी महिला संगठन से संपर्क कर सदस्यों को साथ ले जाएं।

□

मेरी हां का मतलब हां है
और ना का मतलब ना
मेरी 'हां' 'ना' का अर्थ बदलने वाले
तुम कौन?

एक अभियान

नौर प्लांट के खिलाफ़

इस बात से कोई इंकार नहीं करता कि परिवार नियोजन की ज़रूरत है। परिवार नियोजन के लिए गर्भ निरोधकों की भी ज़रूरत है, ताकि बच्चे तभी हों जब मां-बाप चाहें। एतराज़ तो इस बात पर है कि सभी गर्भ-निरोधक सिर्फ औरतों के लिए ही क्यों बनाए जाते हैं। परिवार छोटा रखने की जिम्मेदारी बाप की भी है। चलिए, अगर गर्भ निरोधक औरत के लिए भी बनाए तो कम से कम वे पूरी तरह सुरक्षित हों। सबसे बड़ी बात, कि वे उस पर थोपे न जाएं। उन्हें इस्तेमाल करने या न करने का फैसला उसकां अपना हो।

एक ऐसे नए गर्भ निरोधक के खिलाफ अभियान छिड़ा है जो औरत के स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह हो सकता है। जो उससे उसके अपने शरीर पर हक़ छीन लेता है। बगैर डाक्टरी मदद के औरत न उस गर्भ निरोधक का इस्तेमाल कर सकती है और न ही छोड़ सकती है। उसका नाम है नौर प्लांट।

नौर प्लांट क्या है?

सिलेस्टिक नामक रबर की बनी हुई पतली-पतली नलियां होती हैं। इनके भीतर 'लेवनोजॅस्ट्रोल' नामक हारमोन भरा होता है। ये नलियां औरत की ऊपरी बांह में चीरा लगा कर चमड़ी के नीचे दबा दी जाती हैं। नलियों में से धीरे-धीरे हारमोन निकल कर औरत के खून में मिलता रहता है। इससे गर्भ नहीं ठहरता। यह नलियां पांच साल तक काम करती हैं। जब उनका हारमोन खत्म हो जाता है तब फिर डाक्टर द्वारा आपरेशन कर के यह नलियां बाहर निकाल दी जाती हैं। यह गर्भ निरोधक अमरीका ने बनाया है।

भारत में इस्तेमाल

हमारे देश की औरतों पर इसकी जांच भी पूरी नहीं हुई है। सरकारी दवा कानून के हिसाब से इसकी जितने चरण में जांच होनी चाहिए उसे पूरा किए बगैर अब बड़े पैमाने पर औरतों को लगाया जा रहा है। यह पंद्रह बड़े अस्पतालों के जरिए हजारों औरतों को लगाया जाएगा।

दिल्ली की करीब बारह संस्थाओं ने इस गर्भ निरोधक के खिलाफ आवाज़ उठाई है। सरकार को ज्ञापन पत्र दिया है। औरतों को इसके बारे में बताया जा रहा है ताकि जब यह उन्हें लगाया जाए तो वे इसके बारे में अनजान न हों।

इससे जुड़े खतरे

1. यह हारमोन के ज़रिए गर्भ निरोध करता है इसलिए औरत की माहवारी का चक्र गड़बड़ा जाता है।
2. औरत के शरीर में हारमोन का स्तर बिगड़ने से सिर दर्द, चक्कर, घबराहट, उदासी, थायोरायड की तकलीफ आदि भी हो सकती है।
3. ब्लड प्रेशर बढ़ना, दिल की धड़कन महसूस होना, डिंब में गांठ होना जैसी बीमारियों का खतरा भी होता है।
4. कुछ मामलों में नलियां मांस के भीतर टूट सकती हैं, अपनी जगह से खिसक सकती हैं

या कई साल शरीर के भीतर रहने से उसके चारों तरफ मांस जमा हो जाता है।

5. यह हारमोन औरत के दूध के साथ भी निकलता है। इसलिए दूध पिलाने वाली औरत के बच्चे को खतरा हो सकता है।

औरत जो भी गर्भ निरोधक इस्तेमाल करे उसे उसके साथ जुड़े खतरों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। यह हर औरत का बुनियादी हक़ है। यह सही है कि अमरीका में कुछ औरतें यह गर्भ निरोधक इस्तेमाल कर रही हैं परन्तु भारत और अमरीका के हालात में बहुत अंतर है। वहां आम स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर हैं। औरतों की शिक्षा और जानकारी का स्तर ऊंचा है। किसी प्रकार के नुकसान की भरपाई के कानून अलग हैं। यहां लोगों को बीमार होने पर तो पूरा इलाज मिल नहीं पाता। ऐसी दशा में गर्भ निरोधकों की गड़बड़ी की देखभाल कौन करेगा। ये नलियां शरीर के भीतर हैं, औरत अपने आप निकाल भी नहीं सकती।

किन औरतों को यह गर्भ निरोध बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करना चाहिए—

1. जिन्हें शक हो कि उन्हें गर्भ ठहर गया है।
2. बच्चे को दूध पिलाने वाली औरतें।
3. जिन्हें पहले ही ज्यादा माहवारी होती हो।
4. जिन्हें माहवारी में कुछ गड़बड़ी हो।
5. जिन्हें जिगर की बीमारी हो।
6. ऊंचे ब्लड प्रेशर या चिंता की शिकायत हो।
7. जिन औरतों को छाती में या बच्चेदानी का कैंसर हो।
8. जिन्हें पीलिया का रोग हो।
9. जो तपेदिक की दवाई ले रही हों।
10. जिन्हें हरपीज़ नामक बीमारी हो। □

विदेश की एक मिसाल

कम उम्र में मां बन गई, कोई बात नहीं

लड़कियां अगर कम उम्र में मां बन जाएं तो क्या उन्हें शिक्षा, ट्रेनिंग, नौकरी की बात नहीं सोचनी चाहिए? क्या घर की चारदिवारी में बंद रहकर जिंदगी बिताना ही उनकी किस्मत है? हरगिज नहीं।

हां, इसके लिए उनको मौके उपलब्ध कराने होंगे। लेकिन उनकी तथा उनके घरवालों की सोच में भी बदलाव ज़रूरी है।

जमैका (दक्षिण अमरीका), विकास की दौड़ मे लगा एक छोटा-सा देश है। 24 लाख की आबादी वाले इस देश में 7 महिला केंद्र खोले गए हैं। इनमें कम उम्र की गर्भवती लड़कियों को यौन और जिंदगी के बारे में स्नेहपूर्वक शिक्षा दी जाती है। बच्चा जनने में केंद्र मदद करते हैं। छोटी माताओं को जीवन के प्रति उत्साहित किया जाता है। उन्हें शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाता है। रोज़गार के लिए हुनर सिखाए जाते हैं। इस सबसे उनका मनोबल बढ़ता है। वे समाज में अपना स्थान बनाने के लिए जुट जाती हैं।

शुरु में लोगों ने इन केंद्रों को बड़ी शक की निगाहों से देखा। लोगों को लगा कि शायद यह कम उम्र में मां बनने को बढ़ावा देना है। लेकिन लड़कियों की जिंदगी अच्छी बन जाने से लोगों की गलतफहमी दूर हो गई।

पिछले 13 सालों में करीब 4000 लड़कियां फिर से स्कूल पढ़ने गईं। करीब 2,500 ने तरह-तरह की ट्रेनिंग ली और वे अपने पैरों पर

केरल का समाज
जहां औरतें पढ़ी-लिखी हैं

भारत के दक्षिण कोने में स्थित है केरल राज्य। वहां के सामाजिक ढांचे में स्त्रियों का बहुत महत्व है। मातृसत्ता के तहत संपत्ति बेटियों को वसीयत में मिलती है। वहां लड़कों को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता है।

महिलाओं और पुरुषों में लगभग पूर्ण साक्षरता है। औरतें केवल साक्षर ही नहीं, पढ़ी-लिखी भी हैं। इससे वहां बच्चों की मृत्यु-दर और जन्म-दर कम है। परिवार नियोजन के कार्यक्रम काफ़ी सफल हैं। वहां काफ़ी पुराने समय से स्त्री शिक्षा का रिवाज़ है। वहां अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं भी उपलब्ध है। पढ़ी-लिखी होने के कारण औरतें इनका पूरा फायदा भी उठा पाती हैं।

खड़ी हो सकीं। यहां कम उम्र के पतियों को भी सलाह-मशविरा दिया जाता है।

इससे कम आयु में मां बनने की तादाद में भी कमी आई है। इसके कारण स्कूल छोड़ने की संख्या में भी कमी आई है। दूसरी बार गर्भवती बनने की संख्या तो सिर्फ 1.5 फी सदी रह गई है।

देखा गया है कि एक बार कम उम्र की लड़कियों में जागरुकता आ जाए तो वे जिंदगी में बहुत आगे बढ़ सकती हैं। वे थक-हार कर पीछे नहीं हटती हैं। इनमें से कई डाक्टर, टीचर, युवा नेता, सचिव आदि बनी हैं। इन लड़कियों को हौसला और उचित मौका देने की ज़रूरत है।

एलन फर्गुसन
(साभार: विमेन्स फीचर सर्विस)

केरल में ग्रामीण और शहरी इलाकों में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है। केरल में यों तो हिंदू, ईसाई, मुसलमान सभी हैं लेकिन जाति और धर्म के नाम पर कोई घोर विवाद नहीं है। वहां कोई अल्पसंख्यक होने की भावना भी नहीं है। लोगों के सामाजिक स्तरों में भी बहुत फर्क नहीं है।

केरल से सीख—जनसंख्या नियंत्रण

केरल के उदाहरण से हम काफी कुछ सीख सकते हैं। अब जब भारत के कोने-कोने में साक्षरता अभियान चल रहा है कुछ हद तक पढ़ना लिखना काफी हमारी पहुंच में आ गया है। कम बच्चे पैदा करना भी हमारे हाथ में है। उससे बच्चों की ज्यादा अच्छी देखभाल होती है।

महिलाओं की शिक्षा का जनसंख्या नियंत्रण में बहुत ही महत्व है। इसलिए महिलाओं को साक्षर बनाने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाना होगा।

जब बच्चों की मृत्यु-दर कम होती है तो लोग ज्यादा बच्चे पैदा करने की नहीं सोचते हैं। इसलिए अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं उनको देनी होंगी।

लड़कियों के जल्दी विवाह नहीं होने चाहिएं। 18 वर्ष की कानून द्वारा तय की गई उम्र का कठोरता से पालन होना चाहिए।

दहेज की कुप्रथा को बंद करने के लिए हर संभव कोशिश की जानी चाहिए जिससे कि लोगों में लड़के की ललक कम हो।

रमेश पुरी
(साभार: साप्ताहिक हिंदुस्तान)

बांध कर तूफ़ान को

हम चलेंगी बांध कर तूफ़ान को
तोड़ देंगी आंधियों के मान को
ज्यों उठती समुंदर में लहर
मानो ढा देंगी वह कहर
दांव पर हम लगा देंगी प्राण को
हम चलेंगी बांध कर तूफ़ान को।

हैं खड़े पर्वत हमारी राह में
बहनें हैं कुछ खंदको में
बढ़ा के मर्दों समान अपने मान को
हम चलेंगी बांध के तूफ़ान को।

जो चढ़ी हैं सीढ़ियों पे
पा सकी हैं मंजिल वही
समझने वालों ने समझ लिया इस बात को
हो सके सबका हित
हम बढ़ाएं इसी पहचान को।

—सरोज गुप्ता

ग्राम पंचायतों में महिलाओं की भूमिका

सूत्र, जगजीतनगर से प्राप्त एक रपट

महिला सम्मेलन (3-5 अप्रैल) में कई बुनियादी मुद्दों पर चर्चा हुई। कुछ सवाल उठे और कुछ सुझाव दिए गए।

ग्राम पंचायतों में इस बार जो चुनाव हुए हैं उनमें महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित रखी गईं थीं। कुछ जगह 30 फी सदी, कुछ जगह उससे कम। महिलाएं कमज़ोर नहीं हैं। मगर आज के सामाजिक और राजनैतिक ढांचे के चलते उनकी स्थिति कमज़ोर पड़ती है। **अगर हम पूरी जनसंख्या की आधी हैं तो हमें 30 फी सदी सीटें क्यों?** अगर पंचायत में महिलाओं का सच्चा प्रतिनिधित्व चाहिए तो महिलाओं को उनका प्रतिनिधि चुनने का अधिकार देना चाहिए।

हमारी इच्छा से सब हुआ हो या न हुआ हो, पंचायतों के चुनाव में हम महिलाएं आ चुकी हैं। अब हमें यह देखना है कि हम उससे कितना फायदा उठा सकती हैं। हमारी बहने पंचायतों और बी.डी.सी. में बैठ रही हैं उनका हम कैसे साथ दें, यह सोचना-समझना ज़रूरी है। कैसे हम इनके हाथ मज़बूत बनाएं? कैसे इनकी हिम्मत बढ़ाएं? कैसे ज्यादा से ज्यादा महिलाओं के हित में काम कर सकें?

जो महिलाएं पंचायत में आई हैं वह मोटे रूप से तीन अलग-अलग तरह की हैं—

जो महिलाएं मंडल से संबंधित हैं।

जो महिलाएं सिर्फ पुरुषों के द्वारा चुनी गई हैं और किसी महिला संगठन से जुड़ी नहीं हैं।

जो महिलाएं अपनी इच्छा से चुनावों में खड़ी हुईं और जीतीं।

इन सबको एक ही स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। पुरुषों के इस झुंड में महिलाओं के हितों की रक्षा कैसे की जाए। इसके लिए प्रशिक्षण की ज़रूरत है। ताक़त बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण और महिला मंडलों से तालमेल बनाना दोनों ज़रूरी हैं।

हमें एक अच्छा मौका हाथ लगा है उसे गंवाना नहीं है। महिला मंडलों से जुड़ी महिलाओं की ज़िम्मेदारी बनती है कि वह पंचायत की सदस्य महिलाओं से संपर्क करें, उन्हें सहारा दें और उनका सहारा लेकर महिलाओं के हित के लिए उनके काम में पूरी मदद करें।

जो महिलाएं चुन कर आईं हैं उन्हें यह समझना ज़रूरी है कि वे पुरुषों का प्रतिनिधित्व करने के लिए पंचायत की बैठकों में नहीं बैठ रहीं हैं। उनके कंधों पर अपनी पंचायत की सभी महिलाओं की जिम्मेदारी हैं। उन्हें अपनी ताक़त को पहचानना होगा। वे राजनैतिक मान्यता प्राप्त व्यक्ति हैं। वे जन-प्रतिनिधि हैं। जनता के हितों की रक्षा करना उनका पहला फ़र्ज है। महिला मंडलों को सिर्फ सामाजिक मान्यता मिली हुई है। इसलिए हम सबको उन पंचायतों में चुनी बहनों के साथ तालमेल बिठाना है।

□

अजूबों से भरी है यह दुनिया

अजूबों से भरी है यह दुनिया
जान सके वह सीख सके वह
जो हो पढ़ा-लिखा
कौन था कब राजा
कौन था जीता कौन हारा
मिलेंगी बातें इतिहास के पन्नों में
कौन नदी मिली किससे
कौन सा बड़ा पहाड़ सबसे
मिलेंगी सब भूगोल के पन्नों में
गणित के पन्नों से
खुले अकल का पिटारा
गृह और अंतरिक्ष यान
है सब बातें विज्ञान की।

—पुराण भारती
(अनुवाद किया रूनू ने बंगाली से)

अच्छाई में शर्म क्या
शर्म है बुरे कामो में
पिंजड़े में क्यों बंद मानव
क्यों बांधे खुली आंखों में पट्टी
व्यर्थ का पर्दा क्यों
प्रतिबंध छोड़ बाहर आओ
अंदर छिपी कलाएं
निखार कर तो देखो
बन सकती हो श्रेष्ठ
कुछ सीमाएं लांघ कर तो देखो
है स्वछंद विचरण
मानव का जन्मसिद्ध अधिकार
सदियों की रूढ़ियां छोड़
नवयुग का निर्माण करो।

—तुलसी साहू

छोटी सी तस्वीर

एक दीप से हज़ारों दीप जले
मिले सब दीप बने ज्वाला
आओ ज्वाला बन जाएं।
फैलाएं जग में उजियाला
उजाले की पहली किरण
नया सवेरा लाएगी
हर अबला को सबला
नई राह दिखलाएगी
न शोषण, दहेज, न अत्याचार
न कोई जलेगी बाला।

—रामचंद्र राठौर

सामाजिक मान्यताओं से जूझती नौकरी पेशा महिलाएं

रीता चतुर्वेदी

आज की मंहगाई और अर्थ-व्यवस्था में बहुत-सी महिलाओं का नौकरी करना एक ज़रूरत बनता जा रहा है। फिर भी मर्द उनके नौकरी करने की बात से चौंकते हैं, खासकर मध्यम वर्ग। उच्च मध्यम-वर्गीय और उच्च वर्गीय घरों की महिलाएं जब नौकरी की बात करती हैं तो उसको समझना और भी मुश्किल हो जाता है।

औरत को सिर्फ भौतिक सुख सुविधाएं ही नहीं चाहिएं। उसकी रचनात्मक कार्य करने की इच्छा, अपनी जगह और पहचान बनाने की ज़रूरत कोई नहीं समझ पाता।

मनोवैज्ञानिक ब्रायन का कहना है कि "दरअसल शुरू से ही पुरुष इस व्यवस्था में विश्वास करता है कि औरत हर चीज़ के लिए उस पर ही निर्भर करती है। उसके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की बात सुनकर वह चौंक जाता है।"

अधिकांश पतियों की अजीब सी प्रतिक्रिया होती है जबकि पत्नियों की वैसी नहीं होती। एक पत्नी अगर आफिस से फोन करके पति को अपनी तरक्की की बात बताती है तो पति पूछता है—क्या इस तरक्की से तुम्हें आफिस में ज़्यादा समय देना होगा? ज़्यादा मीटिंगों में जाना होगा? बच्चों का क्या करोगी? क्या घर में नौकरानी रखोगी? खुशी और उत्साह तो दिखता ही नहीं है।

कुछ पति ईष्यालू व चिड़चिड़े हो जाते हैं। वे हर काम में पत्नी की कमियां निकालने लगते हैं। पत्नी की तुलना घरेलू औरतों से करने लगते हैं। पत्नी की आर्थिक आत्मनिर्भरता इनके अहम् पर चोट करने लगती है। इसमें धीरे-धीरे कुछ बदलाव आ रहा है, लेकिन वह नहीं के बराबर है। □

शिक्षा बनाएगी हमें साक्षर
और देगी काम का हुनर
आएगा समाज में बदलाव
होगी चेतना की रोशनी उजागर।
हम ही तो हैं समाज की शक्ति
हम ही से तो आएगी मुक्ति
शिक्षा के हथियारों के बल से
टूट कर गिरेगा पुराना समाज ये।
शिक्षा मचाएगी खलबली
नव जागरण की हवा चली
नव जागरण की मशाल जली
रोशन हुई हर गली-गली।

—रुपाली पटनायक
अनुवाद किया रुनू ने बंगाली से

'सबला' के लेखों पर चर्चा— एक रपट

गांव सलैमपुर खुर्द, कला, जगजीवनपुर, ललिता मूड़िया इन सभी गांवों में निलियम हैं परंतु कोई महिला यहां पढ़ने नहीं आती है। महिलाओं को यह पता ही नहीं है कि निलियम क्या है और किसके लिए है।

सलैमपुर खुर्द, कला, जगजीवनपुर, ललिता मूडिया (जिला भरतपुर) की महिलाओं से बातचीत की। फिर 'सबला' के लेख पढ़कर चर्चा की (अंक अक्तूबर-नवंबर, 1991)।

हमारे देश में कितनी औरतें हैं।

कोई गिनती थोड़े ही है।

क्या आधी औरतें, आधे मर्द नहीं हैं?

असल में गिनती की भी जाती है और औरतें आधी से कम हैं। क्यों कम होती जा रही हैं?

यह तो कुदरत का खेल है। "कर्महीन को बेटा मरे, भाग्यवान की बेटी मरे।"

यह कुदरत का खेल नहीं है। क्या पुरुषों के बनाए भेदभाव कम हैं? क्या लड़की की उतनी ही देखभाल की जाती है? क्या अकेले आदमी यह दुनिया का कारोबार चला सकते हैं?

महिला किसान—उपेक्षित क्यों?

लेख पढ़ने के बाद उनको लगा कि सही लिखा है कि किसान सिर्फ पुरुष ही नहीं होते हैं। बुवाई, गुड़ाई, निराई, कटाई सभी काम महिलाएं करती हैं। सिर्फ जुताई और फसल बेचने का काम मर्द करते हैं।

इस तरफ हमारा ध्यान ही नहीं गया। असल में हम पुरुषों से ज़्यादा मेहनत करती हैं। हम तो मरते दम तक काम करती हैं। पुरुष जैसे ही बेटा बड़ा हुआ आराम करने लग जाते हैं। अपनी ज़िम्मेदारी उन पर छोड़ देते हैं। औरतें घर की, बच्चों की जिम्मेदारी जब तक सांस रहती है निभाती हैं।

पशुओं को संभालना, डेरी का काम भी औरतें ही करती हैं।

ज़ब पशुओं की देखभाल संबंधी प्रशिक्षण होता है तो कौन जाता है?

पुरुष ही जाते हैं। हम पढ़ी-लिखी नहीं हैं क्या समझेंगीं! वे लोग हमें आकर समझा देते हैं।

क्या आप नहीं चाहती कि आप भी जाएं?

हम जाना तो चाहती हैं। हम चाहती हैं कि हमारे गांव में ऐसे प्रशिक्षण हों।

जिंदगी अपनी सजाएंगे

पढ़कर सुनाने से उनको मुद्दा समझ में नहीं आया।

क्या आप लड़की और लड़के में भेदभाव करती हैं?

बिलकुल नहीं करती हैं।

क्या लड़कियों को स्कूल भेजती हैं?

नहीं।

क्या लड़की के जन्म पर खुशी मनाती हैं।

नहीं, लड़की तो पराया धन है।

आपके परिवार का मुखिया कौन है?

मुखिया तो पुरुष ही होता है।

घर और खेत दोनों में ही तुम बराबर से ज़्यादा काम करती हो। लेकिन मुखिया पुरुष बन जाता है।

यह तो सदियों से चला आ रहा है।

इसमें बदलाव आ सकता है अगर हम अपनी सोच बदलें।

गांव की महिलाएं इस तरह की बात सुनकर खुश होती हैं। जब उनसे खुल कर बात की जाती है तब वह अपनी बात कह कर दिल का बोझ हल्का कर लेती हैं। इतनी जल्दी बदलाव तो आने वाला नहीं है।

"तोड़ अपना मौन" कविता उनको सुन कर समझ में नहीं आती है। लेकिन उनको अर्थ बताकर चर्चा की जाए तो वह खुलकर बात करती हैं और इस बात को अच्छी तरह समझती हैं कि उन पर अत्याचार हो रहे हैं।

दूसरे के किए की सज़ा मुझे क्यों?

अगर तुम्हारे साथ ऐसा होता तो तुम क्या करती?

हम किसी से कहते नहीं क्योंकि मदद करने के बजाए बदनामी हाथ लगती है।

आजकल तो क़ानून भी बन गए हैं।

क़ानून तुरंत तो दंड देता नहीं है। कई बार अपराधी छूट भी जाता है। क़ानूनी लड़ाई वही औरत लड़ सकती है जो पढ़ी-लिखी है। अपने पैरों पर खड़ी है।

अगर गांव की पंचायत गांववालों के सामने सज़ा दे तो शायद यह सब रुक सकता है।

अगर लक्खी आपकी बेटी होती तो आप क्या करती?

उसे तसल्ली देते। घरवालों को उसकी मदद करनी चाहिए। हम उसके मां-बाप की तरह नहीं करतीं।

क्या लक्खी ने सही कदम उठाया?

हां, लक्खी की हिम्मत की दाद देनी चाहिए। आजकल ज़माना बहुत खराब है। लड़की को पढ़ाना-लिखाना चाहिए। हर लड़की को लक्खी बनाना चाहिए।

क़ानूनी जानकारी न होने की वजह से औरतें ज़्यादा कमज़ोर महसूस करती हैं। समाज मर्द के किए की सज़ा औरत को देता आया है।

जो कुछ मेरे संग हुआ मां

गांव की सभी औरतों ने कहा—आज के ज़माने में सबको पढ़ाना-लिखाना चाहिए। ससुराल में सुख-दुख की बात हो, मां-बाप को लिख तो सकें। घरवाले पढ़ाते नहीं हैं।

लड़कियां—हमारे मां-बाप हमें पढ़ने नहीं भेजते। हमसे घर का काम करवाते हैं। औरतें लड़कियों की कमाई खाती हैं। खुद आराम करती हैं।

एक जाट महिला—हमने अपने छोटे भाई-बहनों को पाला। इसी तरह हमारी बेटी हमारे बच्चों को पाल रही है। इसलिए वह पढ़ नहीं पाती।

सरोज का पत्र सुनकर सभी ने कहा कि कम उम्र में शादी नहीं करनी चाहिए।

लेकिन करनी पड़ती है। बस्ती के लोग जीने नहीं देते। फिर शादी करके ज़िम्मेदारी से मुक्त भी होना चाहते हैं।

"अपंग होते हुए भी" कहानी सुनकर सभी को महसूस हुआ कि सब लड़कियों को पढ़ना-लिखना चाहिए। हाथ पैर, आंख-कान सही सलामत होते हुए हम क्यों नहीं पढ़ते-लिखते हैं? शिक्षा से ज़िंदगी के हर कदम पर मदद मिलती है।

धीरे-धीरे शिक्षा का महत्व लोगों की समझ में आ रहा है।

प्रस्तुति—अनिता ठैनुआं

प्रेरकों ने लिखा है

'सबला' जैसी पत्रिका हमारे गांव की अनपढ़ महिलाओं और पुरुषों का भविष्य उज्जवल बनाने वाली पत्रिका है। जब से यह पत्रिका जन शिक्षण निलियम में आ रही है, यहां के अनपढ़ लोगों में एक नई जागृति पैदा हो रही है। कृपया इसे मासिक करने का प्रयास करें।

संसार चंद भारद्वाज—प्रेरक
ज.शि.नि. कटैला, मंडी (हि.प्र.)

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम एक सामाजिक विकास का पैगाम है। महिलाओं में पढ़ने की रुचि काफ़ी रहती है किंतु सामाजिक ग्रंथियां और रुढ़िवादिता उनके आड़े आती है। वे आगे कदम बढ़ाना चाहती हैं। पुरुषों से कम नहीं रहना चाहती हैं। यह एक कठिन कार्य है। लेकिन जो औरतें पढ़ना-लिखना सीख गई हैं वह गर्व का अनुभव करती हैं, दूसरों से भी उन्हें आदर मिलता है। वे पत्राचार कर सकती हैं। अपने बच्चों को पढ़ाती हैं। घर गृहस्थी का हिसाब किताब ठीक से रखती हैं। उनको बहुत से कामों में किसी का सहारा नहीं लेना पड़ता है।

शिक्षा से ही जीवन खुशहाल है
जहां-जहां शिक्षा, वहां नहीं अंधकार है

रचना भारती, अनुदेशिका
ललियाही कोटा, कटिहार (बिहार)

मैं 'सबला' पत्रिका का बहुत आभारी हूं। बिगड़ी सामाजिक व्यवस्था को सही करने और औरतों को अत्याचारों से एवं उनके भविष्य को जागृत करने में 'सबला' पत्रिका का काफी योगदान रहा है।

अनिल कु. सिंह—प्रेरक
दोहतियामऊ, हरदोई (उ.प्र.)

'सबला' पत्रिका बहुत ही अच्छे ढंग से अपना दायित्व निभा रही है। सबला इसी माध्यम से हर अबला तक पहुंचकर उसे सबला बनाने में उसकी मदद करती रहे। अपने प्रेरणात्मक लेखों से हर अबला को अपने हक़ के लिए लड़ने को कहती है। हर अन्यायी को अन्याय करने से रोकती है। फरवरी-मार्च का ''हमारी बात'' बहुत प्रेरणादायक है।

सत्यनारायण पटेल—प्रेरक
क्षिप्रा, देवास (म.प्र.)

'सबला' नित पढ़ने को मिलती
यह सबको अच्छी सीख देती
चाहे स्त्री या पुरुष हो
चाहे बेटा या बेटी हो।
'सबला' से संबल मिलता
इससे कच्चा मन पक्का बनता
'सबला' नित तुम पढ़ते जाना
इससे ज्ञान ज़रूर बढ़ाना।
'सबला' महिलाओं में क्रांति लाई
उनको अपना अधिकार बतलाई
अन्याय और अनीति के प्रति संघर्ष लाई
समाज में उनको न्याय दिलाई।

रमेशचंद्र जैन—प्रेरक
डोड़ी, जि. झालावाड़ (राजस्थान)

फरवरी-मार्च के अंक में छपा "महिला सुरक्षा क़ानून" लेख बहुत सराहनीय है। इन नियमों की जानकारी से हमारे समाज खासकर औरतों को बहुत मदद मिलेगी।

अर्जुन सिंह बारड़—प्रेरक
अनादरा, सिरोही (राजस्थान)

घिरा हुआ था देश हमारा निरक्षरता के घेरे में
भारतवासी भटके थे अविद्या के अंधेरे में
बढ़ते-बढ़ते अब शिक्षा का इतना ज़ोर बढ़ा
शिक्षा का सागर उमड़ा चारों ओर बढ़ा
ज.शि.नि. का शोर बढ़ा सब चेहरों में
आने लगा बदलाव देश के नर-नारी में।

राजवीरसिंह वर्मा—प्रेरक
रसूलपुर गांवड़ी, मवाना, मेरठ (उ.प्र.)

पाठकों की कलम से

'सबला' सहयोग मंडल को नव-वर्ष की बधाई। आपको समर्पित एक कविता—

आए दिन 'सबला' के
तन मन महकाने के
सत्य को अपनाने के
अंहकार हटाने के।
'सबला' चेतना को
घर-घर में अपनाने के
नर-नारी को समझाने के
आए दिन सबला के।
'सबला' उत्थान हेतु
घर-घर दीप जलाने के
नवज्योति जगाने के
आए दिन 'सबला' के।

सीता धाकड़
कालाकोट, जिला मंदसौर

दहेज का खत्म होगा अत्याचार
जब बेटी होगी समझदार
तो क्यों न बेटी को अच्छे से पढ़ाएं
और दहेज के कुचक्र से छुटकारा पाएं।

कु. अल्पना शर्मा
मालाड, बंबई

खालिस औरतों की ज़ुबान—नुशु

चीन में एक ऐसी भाषा का पता चला है जिसका इस्तेमाल सिर्फ औरतें ही करती थीं। आपस में कोई गुप्त बात कहनी हो उसे इस भाषा में कहती थीं। यह भाषा पंखों और डायरियों पर लिखी भी जाती थी। मर्द इसे नहीं जानते थे और इसे नीची नज़र से देखते थे।

करीब हज़ार या उससे भी ज़्यादा साल पहले इसका काफ़ी चलन था। लड़कियां ससुराल से इसी भाषा में चिट्ठी लिखती थीं। कहते हैं इसमें लगभग दो हज़ार अक्षर हैं और यह काफ़ी जटिल भी है।

उस ज़माने में औरतों को शिक्षित नहीं किया जाता था। चीनी भाषा उन्हें नहीं सिखाई जाती थी। इसलिए "नुशु" का चलन हुआ।

आजकल गिनी-चुनी चीनी औरतों को ही इसकी जानकारी है। 83 साल की हयूनान प्रांत की एक महिला यांग हुआन्यी यह भाषा जानती हैं। इस भाषा पर वहां काम चल रहा है। कुछ चीनी लड़कियों ने भी नुशु भाषा सीखना शुरू कर दिया है।

'सबला' के बारे में हमारी बात

कमला भसीन

अगर वर्षों में गिने तो 'सबला' चार वर्ष की हो गई है, पांचवे में लगी है। अगर अंकों में गिनें तो 'सबला' 28 की हो गई है, यानि अब तक 'सबला' के 28 अंक छप चुके हैं। सोचा इस मौके पर 'सबला' के बारे में आप के साथ कुछ बातचीत हो जाए। 'सबला' को चलाने, बनाने, बढ़ाने में किन-किन लोगों का हाथ रहा है, आर्थिक सहायता कहां से मिलती रही है, 'सबला' कहां-कहां जाती है, लोग 'सबला' के बारे में क्या लिखते हैं, आदि आदि।

'सबला' हमने नवसाक्षर व अन्य पढ़ी लिखी ग्रामीण व शहरी महिलाओं के लिये शुरू की थी। इस तरह की पत्रिका की काफ़ी कमी महसूस होती थी, एक ऐसी पत्रिका जो महिलाओं की नज़र से महिलाओं की स्थिति, समस्याओं, उनके संघर्षों, सपनों के बारे में लिखे। हर दो महीने में नवसाक्षरों के हाथ में कुछ अच्छी, रोचक, शिक्षाप्रद, पाठन सामग्री पहुंचे। कविताएं, गीत, कहानियां, पोस्टर, नारे, लेख, तस्वीरें हमने अपने पाठकों तक पहुंचाने की कोशिश की है। पहले वर्ष में दस अंक छपे और उसके बाद हर वर्ष में छः अंक।

शुरुआत

'सबला' की शुरुआत करने का श्रेय श्रीमती शारदा जैन को जाता है। 1987 में शारदा जी पहली बार मेरे पास आईं और 'सबला' शुरू करने का अपना सपना मुझे बताया। मैं शारदा जी के व्यक्तित्व और विचारों से बहुत प्रभावित हुई। शारदा जी दिल्ली के एक नामी महिला कॉलेज की प्रिंसीपल थीं। पर अब वो सिर्फ कॉलेज चला कर खुश नहीं थीं। कुछ और करना चाहती थीं। गांवों की लड़कियों और औरतों के लिए शिक्षा और तरक्की के अवसर जुटाने की कोशिश करना चाहती थीं।

कुछ नया और ज़्यादा उपयोगी काम करने की इच्छा इतनी प्रबल हो गई कि शारदा जी ने कॉलेज से त्यागपत्र दे दिया और भरतपुर ज़िले में महिलाओं और लड़कियों के लिए काम शुरू कर दिया। उसी काम के दौरान शारदा जी को 'सबला' जैसी एक पत्रिका की ज़रूरत महसूस हुई और उन्होंने 'सबला' शुरू करने का इरादा किया।

'सबला' सहयोग मंडल

'सबला' चलाने के लिए उन्होंने एक सहयोग मंडल बनाया। इसमें शामिल हैं शारदा जी के पति, श्री ज्ञानेन्द्र प्रसाद जैन, जिन्होंने हर प्रकार की सहायता की और अभी भी कर रहे हैं, एक अच्छे जीवन साथी की तरह।

मैं भी शुरू से ही सहयोग कर रही हूं। 'सबला' के लिए गाने, नारे, कविताएं, लेख खुद लिखती हूं। औरों से लिखवाती हूं। समय-समय पर 'सबला' के बारे में मशवरों, बातचीत में शामिल होती हूं। 'सबला' के लिए आर्थिक साधन जुटाने में शारदा जी की मदद करती हूं।

सुहास कुमार पिछले तीन वर्षों से 'सबला' को चलाने में बहुत योगदान कर रही हैं। अभी साल

भर से वीणा शिवपुरी भी 'सबला' के लिए लगातार लिख रहीं हैं। सुहास और वीणा 'सबला' के लिए इधर-उधर से लेख, कहानियां, कविताएं जुटाती हैं। ये दोनों जागोरी समूह की सदस्याएं हैं। 'जागोरी' समूह शुरू से 'सबला' के साथ सहयोग कर रहा है। 'जागोरी' प्रकाशनों में से समय-समय पर 'सबला' में लेख, कविताएं छपती हैं। 'जागोरी' लायब्रेरी से 'सबला' के लिए लेख आदि ढूंढे जाते हैं।

प्रतिभा गुप्ता एक और सहयोगी है जिनकी ज़िम्मेदारी 'सबला' के वितरण की है। वही आप की प्रति आप तक पहुंचाती हैं।

'सबला' को चित्रों से सजाने, उसको आकर्षक बनाने में सहयोगी रही हैं रचना बड़ोदिया, तापोशी घोषाल, दीपा ढोंढे, भारती मीरचंदानी और बिंदिया थापर।

इन सब के सहयोग से ही हम 'सबला' निकाल पाए हैं।

आर्थिक सहयोग

'सबला' को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग हमें कई संस्थाओं से प्राप्त हुआ। पहले साल में भारत सरकार के महिला व बाल विकास विभाग ने हमें अनुदान दिया। यूनीसेफ़, नई दिल्ली ने 5000 प्रतियों के लिए दो वर्ष तक आर्थिक सहायता दी और 'सबला' को आंगनवाडी कार्यकर्ताओं तक पहुंचाया।

पिछले दो वर्षों से केंद्र सरकार का प्रौढ़ शिक्षा विभाग, नई दिल्ली 'सबला' को आर्थिक सहायता दे रहा है। उनकी सहायता से 'सबला' की 6000 प्रतियां पांच राज्यों के जन शिक्षण निलियमों को भेजी जाती हैं। 'नोराड' हमें एक हज़ार प्रतियां छापने के लिए सहायता दे रहा है।

आजकल 'सबला' की 7000 प्रतियां छपती हैं और ये अधिकतर गांवों में जाती हैं। हमारे पाठक हैं जन शिक्षण निलियमों के कार्यकर्ता व सदस्य, स्कूलों के अध्यापक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, स्वयं-सेवी संस्थाओं के कार्यकर्ता व ग्रामीण महिलाएं, पुरुष, लड़के, लड़कियां जिनके साथ ये सब संस्थाएं काम करती हैं। कुछ संस्थाएं जैसे प्रिया, जागोरी, अंकुर, सबला-संघ, सेवा मन्दिर, एकलव्य, प्रयास, इदारा जयपुर, आदि 'सबला' की काफी सारी प्रतियां लेकर अपने अपने इलाकों में लोगों तक पहुंचाते हैं। बहुत सारे गांव के लोग जो किसी संस्था से नहीं जुड़े हैं वो भी 'सबला' मंगवाते हैं।

हमारे पाठकों में पचास प्रतिशत से भी अधिक पुरुष हैं। हम सभी पाठकों को 'सबला' निःशुल्क भेज रहे हैं। बहुत से पाठकों के पत्र हमें आते हैं। कुछ तो हमने छापे भी हैं। लगभग सभी पत्रों में 'सबला' की प्रशंसा होती है। इन पत्रों से व 'सबला' की रोज़ बढ़ती हुई मांग से हमें पता चलता है कि 'सबला' आप को पसंद आ रही है।

'सबला' को चलाने में हम पाठकों की अधिक भागीदारी चाहते हैं। हम चाहते हैं कि आप सिर्फ़ तारीफ़ के ही ख़त न लिखें, हमारी गलतियां भी निकालें, हमें सुझाव दें। आप हमें अपने काम के बारे में लेख भेजें। अपने विचार भेजें, कविताएं और गाने भेजें। 'सबला' को आप सब और भी सबल और सफल बना सकते हैं। आप हमें सुझाएं कि हम कैसे 'सबला' को और अच्छा और फ़ायदेमंद बनाएं। □

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर हम भारतीय महिलाएं शपथ लेती हैं कि हम समानता, न्याय व शोषण से मुक्ति के लिए एकजुट होकर संघर्ष करेंगी।

हम प्रतिज्ञा करती हैं कि हम स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा करेंगी और साम्प्रदायिक, जातिवादी, कट्टरपन्थी तथा अन्य विघटनकारी शक्तियों का सामना करेंगी।